परमात्मा का सत्य परिचय

ब्र. कु. प्रफुल्लचंद्र

----परमात्मा की सत्य संकल्पना----

विश्व में सदियों से चर्चित होता आ रहा सबसे ज्यादा विवादास्पद विषय हो तो वह परमात्मा के बारे में हैं| आज भी परमात्मा के बारे में अनेकानेक मान्यताएं, धारणाएं एवं विचारधाराएं प्रवर्तमान हैं| आज विश्व में परमात्मा के अस्तित्व के बारे में शंका रखनेवाले लोगों की भी कमी नहीं है और उनके अस्तित्व में श्रध्दा या विश्वास रखकर उसे याद करनेवाले लोगों की भी कमी नहीं हैं| परमात्मा, अल्लाह या गोड फादर हैं या नहीं? हैं तो कौन हैं? कैसे हैं? कहाँ हैं? ऐसे अनेक प्रश्नों में आज का मनुष्य उलझा हुआ हैं| इश्वर के बारे में जो अनेक विरोधाभासी मंतव्य हैं वह दिन प्रतिदिन बदलते और बढ़ते भी जा रहे हैं | हमारे भारत देश में कहा भी गया हैं कि 'तुंडे तुंडे मतिर्भिन्ना' अर्थात जितने सर उतनी बातें| परमात्मा के बारे में इन विरोधाभासी मान्यता ओर मंतव्यों में कुछ ध्यानाकर्षक विचारधाराएं इस प्रकार हैं|

------परमात्मा के बारे में विरोधाभासी मान्यताएँ--------

- नास्तिक वाद :- आज विश्व में ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जो परमात्मा के अस्तित्व का ही स्वीकार नहीं करते| अर्थात उनके मतानुसार परमात्मा या इश्वर जैसी कोई चीज या हस्ति ही नहीं हैं|
- आस्तिकवाद :- दूसरी ओर आज विश्व में ऐसे अनेक लोग हैं जो इश्वर में विश्वास रखते हैं | भले ही उन्हें इश्वर का सत्य परिचय न भी हो परन्तु वह श्रध्दा और आस्था से मानते हैं कि इश्वर जैसी कोई हस्ति इस जगत में अवश्य हैं|

- एकेश्वर वाद :- कई लोग स्पष्ट रूप से मानते हैं कि इस जगत का नियंता एक ही हो सकता है| अनेक हो नहीं सकते| उसे इश्वर कहो, अल्लाह कहो, या गोड फादर कहो, पर वह एक ही हो सकता है|
- अनेकेश्वर वाद :- ऐसे भी अनेक लोग हैं जो मानते हैं कि इश्वर अनेक होते हैं|
- अद्वैत वाद :- समग्र विश्व में ऐसे भी अनेक लोग हैं जो मानते हैं कि आत्मा से परमात्मा अलग नहीं है| आत्मा ही परमात्मा हैं|
- द्वैतवाद :- दूसरी ओर ऐसे भी लोग हैं जो परमात्मा के स्वतंत्र अस्तित्व का स्वीकार करते हैं| जीवात्मा और परमात्मा दोनों भिन्न है ऐसा मानते हैं|
- अवतारवाद :- संसार में कई ऐसे लोग हैं जो मानते हैं कि इश्वर के अनेक अवतार होते हैं| इश्वर अनेक अवतार लेकर के इस विश्व में मनुष्य के रूप में प्रत्यक्ष होकर कार्य करते हैं|
- बिन अवतारवाद :- कई लोग परमात्मा के अनेक अवतारों को न स्वीकार करते हुए मानते है कि इश्वर के अवतार नहीं होते|
- सर्वव्यापक वाद :- विश्व में बहुत से लोग मानते हैं कि इश्वर सर्वव्यापी हैं| अर्थात विश्व की हर चीज वस्तु में, हर कण-कण में वह व्याप्त हैं|
- परमधाम निवासी :- जब कि कई लोग ऐसा मानते हैं कि परमात्मा सर्वव्यापी नही है, लेकिन इस साकार दुनिया से परे की दुनिया-परमधाम के निवासी हैं|
- कई लोग परमात्मा को नाम रूपवाला मानते है, तो कई लोग उसे नाम-रूप से न्यारा भी मानते हैं|

- कई स्वयं को परमात्मा के सेवक मानते हैं, तो कई स्वयं को शिवोहम् अर्थात स्वयं को भगवान मानकर अपनी पूजा करवाते हैं|
- आज विश्व में सगुण साकार से लेकर निर्गुण निराकार तक की विरोधाभासी मान्यताएँ परमात्मा के बारे में प्रवर्तमान हैं|

------ परमात्मा के अस्तित्व की आवश्यकता ------

भले इश्वर के बारे में अनेक मान्यताएँ प्रचलित हो लेकिन एक बात को निश्चित रूप से स्वीकार करना ही होगा कि यह विश्व, जो की एक बेहद का नाटक हैं, वो इतना सुचारूरूप से चलता हैं तो उसका संचालक या नियमन करनेवाला भी अवश्य होना चाहिये| कोई भी छोटी या बड़ी संस्था होती हैं तो उसका संचालक अवश्य होता हैं| जैसे कि एक छोटे परिवार के संचालन के लिये भी कोई व्यक्ति जिम्मेवार होता है| स्कुल के संचालन के लिये प्रिन्सिपाल को नियुक्त किया जाता है| राज्य के संचालन के लिये राजा या मुख्यमंत्री होता हैं| देश के संचालन के लिये प्रमुख या प्रधानमंत्री का होना आवश्यक होता हैं| ठीक उसी रूप से इस बेहद संसार के संचालन के लिये कोई एक नियंता की आवश्यकता अनिवार्य हैं| इसलिए हमें स्वीकार करना ही होगा की जगत का नियामक या नियंता जरुर हैं| प्रश्न सिर्फ उन्हें पहचानने का और उनका सत्य परिचय प्राप्त करने का हैं| इश्वर के प्रति हमारी आस्था, संवेदना और श्रदधा पर आधारित हमारी मान्यताओं से तथा इश्वर के संबंध में सर्वमान्य सत्यों के आधार पर हम इश्वर को बहुत ही स्पष्ट एवम् सहज रूप से पहचान सकते है| इश्वर की सत्य पहचान और

सत्य स्वरूप को निम्नलिखित पाँच मुद्दों के आधार से सरल और सहज रूप से प्राप्त कर सकते हैं|

--परमात्मा के सत्य स्वरूप की पहचान के पाँच मुद्दे--

(१) परमात्मा उसे ही कहेंगे जो सर्वमान्य हो:

हम सभी को ज्ञात हो कि परमात्मा सर्व धर्म की आत्माओं का पिता है| विश्व की हर आत्मा का पिता है| उसका सत्य परिचय ऐसा होना चाहिये कि विश्व की सभी मनुष्य आत्माए उसे स्वीकार करें| परमात्मा कोई एक धर्म या संप्रदाय का नहीं हो सकता|

(२) परमात्मा उसे ही कहेंगे जो सर्वोच्च एवं सर्वोत्तम हैं:

परमात्मा के लिये हम परम, सुप्रीम, अकबर (महान), जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं| परम, सुप्रीम, या अकबर शब्द का अर्थ होता है जिसके समान या समकक्ष कोई नहीं हैं एवं उसके ऊपर भी कोई नहीं हैं| अर्थात परमात्मा उसे ही कह सकते है जिसके समकक्ष भी कोई नहीं हैं और उसके ऊपर भी कोई नहीं हैं| इस बात से यह स्पष्ट होता है कि परमात्मा के अपने कोई मातापिता हो नहीं सकते| क्योंकि वो ही समग्र विश्व का परमपिता हैं| परमात्मा का कोई शिक्षक भी हो नहीं सकता| क्योंकि परमात्मा खुद सर्वज्ञ होने के कारण समस्त जगत के शिक्षक है| इसी तरह परमात्मा का कोई गुरु या सद्गुरु भी नहीं हो सकता| क्योंकि इश्वर या परमात्मा ही जगत का मुक्तिदाता, मुक्तेश्वर होने के नाते समग्र जगत का सतगुरु अर्थात जगतगुरु हैं|

(३) परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वज्ञ हो:

परमात्मा की महिमा जानी जाननहार के रूप में कि जाती हैं| हम मानते है कि परमात्मा वा इश्वर से कुछ भी अज्ञात नहीं हैं| उसे हम ज्ञान के सागर के रूप में याद करते हैं | जब हम किसी बात को समज नहीं सकते है, या किसी बात का हमें पता नहीं होता तब हम कहते है कि उपरवाला जाने| इस बात से यह स्पष्ट होता है कि परमात्मा उसी हस्ती को कह सकते है, जो सर्वज्ञ हो| गीता में भी परमात्मा ने अपने आप को सर्वज्ञ होने की बात बताते हुए कहा है की

वेदाहं समतीतानी वर्तमानानि चार्जुन |

भविष्यानि च भूतानि माम् तु वेद न कश्चन ||

(अध्याय -७, श्लोक -२६)

अर्थात हे अर्जुन, परमात्मा के रूप में मैं, जो कुछ भी भूतकाल में हुआ है एवं जो कुछ भी वर्तमान में हो रहा है और जो अब होनेवाला है वह सब मैं जानता हूँ| मै सब आत्माओं को जानता हु परन्तु मुझे कोई जानता नहीं |

(४) परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वशक्तिमान एवं सर्व गुणों का भंडार हो:

परमात्मा को हम सर्व गुणों का सागर और सर्व शक्तिओं का भंडार मानते हैं| उनकी अपरंपार महिमा भी करते आये हैं| परमात्मा की महिमा को निम्नलिखित श्लोक में बहुत सुन्दर रूप से वर्णित किया गया हैं|

असितगिरि समंस्यात कज्जलं सिन्धुपात्रे |

सुर तरुवर शाखा लेखिनी पत्रमूर्वी ||

लिखति यदि गृहित्वा शारदा सर्वकालं |

तदपि तवगुणानाम् ईश पारं न याति ||

अर्थात सागर को श्याही बनाया जाए, तरुवर की शाखाओं को कलम बनाई जाए, पृथ्वी के पटल को कागज़ माना जाए और ज्ञान की देवी शारदा स्वयं बैठ कर परमात्मा के गुणों की महिमा सर्वकाल के लिए लिखती रहे, तब भी परमात्मा के गुणों की महिमा का अंत आ नहीं सकता|

कुरान में भी अल्लाह की महिमा के लिए ऐसा ही उल्लेख किया गया है कि वो रहनुमा अर्थात दया का सागर है और हर एक जीवात्मा का पालनकर्ता एक ही खुदा महान हैं|

उससे स्पष्ट होता है कि परमात्मा हम उसे ही कहेंगे, जो सर्व शक्तिमान हो, सर्व गुणों का भंडार हो|

(५) परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व से न्यारा हो:

परमात्मा सर्व गुणो, शक्तियों ओर मूल्यों का सागर होने के कारण उसका अपरिवर्तनशील होना अत्यंत आवश्यक हैं| अपरिवर्तनशील वही रह सकता है जो सर्व से न्यारा हो| अर्थात परमात्मा उसे कहेंगे, जो सुख-दु:ख, कर्म-फल, जन्म-मृत्यु इत्यादि जैसे द्वंदों से परे हो, न्यारा हो| दूसरे शब्दों में परमात्मा उसको ही माना जा सकता है जो अजन्मा, अकर्ता, और अभोगता हो एवं जो सर्व

कर्मबंधनों से मुक्त हो| यह बात श्रीमद भगवद् गीता में भी बताई गई हैं|

अब हम किसी भी साकार देहधारी से, फिर वह देवात्मा, पुण्यात्मा, धर्मात्मा, महात्मा या संतात्मा ही क्यों न हो, ऊपर के पाँच मुद्दे को लागू करने का प्रयास करेंगे तो वह लागू नहीं हो सकते| क्योंकि

- साकार देहधारी को अपने माता-पिता, शिक्षक, गुरु अवं रक्षक अवश्य होते है| इसी कारण उसे सर्वोच्च कह नहीं सकते|
- कोई भी साकार देहधारी जन्म-मृत्यु, सुख-दुःख, पाप-पुण्य, कर्म-फल, आदि से मुक्त नहीं होता है, इस कारण वह सर्व से न्यारा भी हो नहीं सकता|
- कोई भी साकार देहधारी सर्व बातों को जानने वाला अर्थात सर्वज्ञ हो नहीं सकता|
- इस विश्व में ऐसी कोई देहधारी व्यक्ति हो नहीं सकती जिसके लिये कुछ भी करना असंभव न हो, ऐसी कोई व्यक्ति हो न सके जो सर्वशक्तिमान, सर्वगुणों एवं सर्व मूल्यों (values) का सागर हो तथा जो अपरिवर्तनशील हो|
- अभी तक कोई एसा देहधारी मनुष्य हुआ नहीं हैं जिस को सारे विश्व की मनुष्य आत्माओं ने इश्वर के रूप में स्वीकार किया हो|

इन बातों से सिद्ध होता है कि कोई भी साकार देहधारी अर्थात व्यक्ति परमात्मा हो नहीं सकता| तो अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि क्या इस जगत में ऐसी कोई हस्ती है, जिसे यह पाँच मुद्दे लागू होते हो? तो उसका उत्तर है **'हा'** : ऐसी हस्ति है जिसे यह पांचों ही मुद्दे लागू होते है|

ऐसी हस्ति की पहचान के लिए हम जगत के महान धर्मो के धर्म स्थापकों ने अपनी स्वानुभूति के आधार पर इश्वर के बारे में जो विविध विचार प्रस्तुत किये है, उन्हें समझने का प्रयास करेंगे| इससे हमारी इश्वर के बारे में संकल्पना (Concept) स्पष्ट हो जायेगी|

-----विविध धर्म स्थापको के इश्वर के बारे में विचार-----

हिन्दु धर्म :

आदि सनातन हिन्दु धर्म में वैदिक समय से निराकार, ज्योतिर्बिंदु स्वरूप, शिव की पूजा-आराधना ज्योतिर्लिंग के रूप में होती आई हैं| ज्योतिर्बिंदु स्वरूप में शिव की पूजा करना असंभव हैं| इसीलिए पूजा-अर्चना की सुविधा के लिए ज्योतिर्लिंग की स्थापना कर पूजन-अर्चन करने की बात वेदों में वर्णित हैं|

हिन्दुधर्म में सर्व मनुष्य आत्माओं के परमपिता अर्थात परमात्मा को देहातीत, अजन्मा, अकर्ता, अभोगता और अव्यक्त स्वरूप में स्वीकार किया गया है| प्राचीन समय से भारत में एवं विश्व के अन्य देशो में भी जगह जगह प्रचलित शिव के मंदिर पाये जाते हैं, जो निराकार, ज्योतिर्बिंदु, शिव परमात्मा की यादगार हैं| भारत के शिव मंदिरों में अमरनाथ, विश्वनाथ, सोमनाथ, केदारनाथ, पशुपतिनाथ, वैद्यनाथ,

मुक्तेश्वर, रामेश्वर, ॐकारेश्वर, त्रंबकेश्वर, नागेश्वर, महाकालेश्वर आदि प्रचलित एवं उल्लेखनीय है| जिसमें कोई देहधारी व्यक्ति की मूर्ति नहीं है किन्तु लिंग की स्थापना की गई हैं तथा उसका श्रद्धा भाव से पूजन-अर्चन किया जाता हैं|

भारत में शिव परमात्मा को ब्रह्मा, विष्णु और शंकर त्रिदेवों के रचयिता के रूप में तथा यह तीनो देवों के आराध्य के रूप में स्वीकार किया गया हैं| श्री राम और श्री कृष्ण जैसे देहधारी देवात्माओं के भी वह आराध्य रहे हैं| श्री राम इतना श्रेष्ठ और आदर्श जीवन कैसे जी सके? क्योकि श्री रामने अपने चरित्र निर्माण अर्थ और उनके जतन के लिए उनके आराध्य परमात्मा शिव का प्रेमपूर्वक मनन चिंतन किया था| सीता स्वयंवर के वक्त शिवधनुष उठाने और तोडने की क्षमता उन्होंने शिवकृपा से ही प्राप्त की थी| लंका विजय में जब विघ्न आये उस समय भी श्री राम ने सागरतट पर शिवलिंग की स्थापना कर शिव की आराधना की थी और परमात्मा शिव ने उनका कार्य सहज कर दिया था| आज भी रामेश्वर में रामेश्वर ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजे जाते है| रामेश्वर अर्थात राम के भी इश्वर हैं| उसी तरह श्री कृष्ण ने महाकालेश्वर में परमात्मा शिव की आराधना की थी| श्री कृष्ण को सुदर्शन चक्र की प्राप्ति भी भगवान शिव से हुई थी| कुरुक्षेत्र के मैदान में महाभारत के युद्ध के पहले स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर, उसकी पूजा करके शक्ति प्राप्त की थी और पांडवों से भी उस शिवलिंग की पूजा करवाकर बाद में युद्ध आरम्भ किया| हमारे देश में कई स्थान पर कृष्णेश्वर, गोपेश्वर महादेव के मंदिर हैं| कृष्णेश्वर अर्थात कृष्ण के भी इश्वर हैं|

सर्व शास्त्रशिरोमणि श्रीमद् भगवद गीता में भी परमात्मा स्वयं का परिचय देते हुए बताते है कि मै निराकार हूँ| ॐकार स्वरूप हूँ| सर्व ज्योतिर्बिंदु स्वरूप आत्माओं का पिता महाज्योति स्वरूप हूँ| मैं अजन्मा, अकर्ता, अभोगता, अव्यय, अकाय, तथा अव्यक्त हूँ| गीता के इस श्लोको में इसका समर्थन मिलता है|

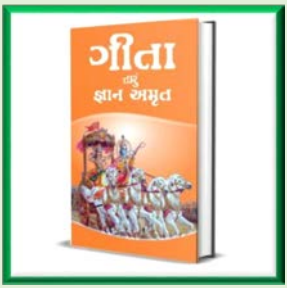

नाहं प्रकाश: सर्वस्य योगमायासमावृत:|

मूढ़ाडयं नाभिजानाती लोकोमामजमव्ययम||

अध्याय-७ श्लोक-२५

अर्थात अपनी योगमाया से ढका हुआ मैं सब को दिखता नहीं हूँ| इसलिए यह मुर्ख और अबुध लोग नहीं जानते कि मै अजन्मा और अविनाशी हूँ| मुझे जन्मने मरनेवाला समझते है ।

यो मामजमनादि च वेत्ति लोकमहेश्वरम

असम्मूढ स मत्येर्षु सर्व पापै: प्रमुच्यते||

अध्याय-१० श्लोक-३

जो मुझे अजन्मा, अनादि और लोगो के महान इश्वर के रूप में जानता है ऐसा मोह रहित ज्ञानी पुरुष सब पापो से मुक्त हो जाता हैं|

मया ततमिदं सर्व जगद्व्यक्तमूर्तिना |

मत्स्थानि सर्व भूतानि न चाहं तेष्ववस्थित: ||

अध्याय-९ श्लोक-४

संपूर्ण जगत मुझ परमात्मा के अव्यक्त स्वरूप से जानकार है | भुत मात्र मुझ में स्थित है, परन्तु मै उनमें स्थित नहीं हूँ |

ईसाई धर्म :-

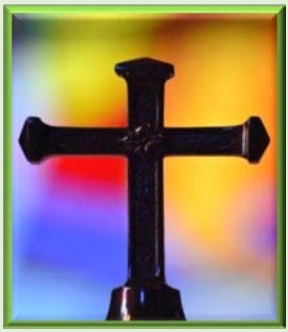

ईसाई धर्म के स्थापक ईसुख्रिस्त परमात्मा का परिचय देते हुए बताते है कि **'There is God'** परमात्मा हैं| **'God is one'** परमात्मा एक ही हैं| **'God is light'** परमात्मा प्रकाश स्वरूप हैं| **'God is beyond death and birth'** परमात्मा जन्म और मृत्यु से परे हैं| अर्थात इश्वर अकाय और अव्यक्त हैं| **'God is Love'** परमात्मा प्रेम स्वरूप हैं| **'God is supreme father of all human souls'** परमात्मा सर्व मनुष्य आत्माओं के परमपिता हैं| **'God dwells in the seventh sky'** परमात्मा सातवें आसमान में निवास करते हैं| '**God is merciful'** परमात्मा दयालु हैं**I 'God is liberator of all'** परमात्मा सर्व का मुक्तिदाता हैं|

ईस्लाम धर्म :-

ईस्लाम धर्म के स्थापक मोहम्मद पैगंबर साहब अल्लाह का परिचय देते हुए कहते है कि ***"अल्लाह हैं ओर अल्लाह एक ही हैं| अल्लाह नूर है अर्थात अल्लाह प्रकाश स्वरूप, ज्योति स्वरूप हैं| लाईलाह ईल्लल्लाहु, अर्थात अल्लाह से अलग कोई भगवान नहीं है| अल्लाह हो अकबर, अर्थात अल्लाह ही सबसे श्रेष्ठ है, महान है, अल्लाह से बड़ा और कोई नहीं है| अल्लाह ताला है अर्थात अल्लाह सर्व का पिता है, मालिक है।"*** ईस्लाम धर्म में निराकार परमात्मा को संगे-अस्वद, नुरे-इलाही के रूप में याद किया जाता हैं| मुसलमान लोग अल्लाह की ***रहेमान*** (दया का सागर), ***रहीम*** (करुणा का सागर), ***अस्लाम*** (अलिप्त), ***अल्मुलिन*** (शांतिदाता), ***अल जब्बार*** (सर्व शक्तिमान) इत्यादि रूप में महिमा करते हैं| मुस्लमान भाई-बहने जब मक्का में हज करने जाते हैं तब एक अंगुष्ठाकार पत्थर, जिसे संगे-ऐ-अस्वद अर्थात काबा का पवित्र पत्थर कहते है, उसे श्रध्दा सुमन अर्पण करते हैं| इस पत्थर का आकर शिवलिंग के आकर जैसा ही हैं, जिसे भारत में कई लोग मक्केश्वर के रूप में याद करते हैं।

सिख धर्म :-

सिख धर्म के स्थापक गुरु नानक देवजी अपने धर्मग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में परमात्मा के बारे में बताते हैं कि परमात्मा "***इक्क ओंकार सत् नाम कर्ता पुरख निरभऊ निरबैर अकाल***

मूरत अजूनी सैभं गुरुप्रसाद अद सच जुगाद सच है भी सच्च नानक होसी भी सच"

अर्थात परमात्मा एक है| ओंकार स्वरूप है| जिसका नाम सत्य है| वह सृष्टि का कर्ता है और निर्भय है। द्वेष रहित है और अकाल मूर्त है। जन्म मरण के बंधन से मुक्त है। क्योकि वो स्वयं प्रकाशित है | उसके वास्तविक स्वरूप को गुरुकृपा से जान सकते है| इसका जप करो, ध्यान करो, वो आदि समय से सत्य है, युगों से सत्य है और अभी भी सत्य है| परमात्मा का सत्य स्वरूप भविष्य में भी हंमेशा रहेगा| इस रूप से परमज्योति स्वरूप, स्वप्रकाश स्वरूप, निराकार, ओंमकार, देहरहित परमात्मा की ही सीख लोग प्रार्थना करते है|

यहूदी धर्म :-

यहूदी धर्म के लोग भगवान को यहोवा अथवा जेहोवा के रूप में अर्थात प्रकाश स्वरूप में याद करते है| यहूदीओं के तोरा ग्रन्थ के अनुसार मोझेस (मूसा) को सिनाई पर्वत पर परमात्मा का ज्योति स्वरूप में साक्षात्कार हुआ। जिसको देखते ही मोझेस ने कहा जेहोवा। और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दश आदेशो (Ten Commandments) के रूप में, सन्देश दिया| जो आज भी उनके ओल्ड टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं| उसमें परमात्मा के बारे में इस प्रकार बताया गया है|

"मैं तेरा भगवान येहोवा या जेहोवा हूँ, मेरा प्रकाश ही सदा तेरी रक्षा करेगा| प्रकाश स्वरूप मेरे सिवा दुसरे किसी भी देवता पर तुम विश्वास नहीं करना| आकाश में, पृथ्वी पर अथवा पानी में किसी भी रूप में भगवान की मूर्ति बनाकर उसकी आराधना नहीं

करना, पूजा नहीं करना। तेरा परमेश्वर, मैं येहोवा हूँ, अर्थात मुझे देने योग्य सन्मान और किसी को दे नहीं सकते, क्योकि मेरे समान कोई नहीं। मैं ही सर्वोतम हूँ, मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ, मैं ही तेरा भगवान येहोवा हूँ, मेरे नाम का कोई अनुचित कार्य के लिये उपयोग नहीं करना।"

बौद्ध धर्म :-

जापान में बौद्धधर्म का एक पंथ है। जिसके अनुयायी एक अंगूठाकार लाल पत्थर को लकड़ी के स्टैंड पर रखकर उस पर अपना ध्यान केन्द्रित करके परमात्मा की आराधना करते है। इस पथ्थर को वो करनी का पवित्र पत्थर कहते हैं। अपनी भाषा में उसको 'चीनकौनशेकी' (*शांतिदाता*) कहते है।

पारसी धर्म :-

इस धर्म में भी अग्नि (आतस) के प्रकाश को इश्वर का स्वरूप मानते है। इसलिए पारसी धर्म स्थान अगियारी में और ज्यादातर पारसी घरो में अग्नि प्रज्वलित रखते है।

उपरोक्त सभी धर्मो के धर्मस्थापक द्वारा दिये गये परमात्मा के परिचय से यह स्पष्ट होता है कि सर्वधर्म की आत्माओं का पिता एक ही हैं और वो ज्योतिबिंदु स्वरूप परमात्मा है। वह अजन्मा, अकर्ता, अभोगाता, अव्यक्त, अव्यय हैं क्योकि वह देहातीत, निराकार हैं।

---स्वयं भगवान द्वारा दिया गया अपना परिचय---

समग्र विश्व एक बेहद का नाटक है, जिसमें सौर-मंडल का यह पृथ्वी ग्रह एक रंगमंच है| इस बेहद नाटक में हम सब मनुष्य आत्माएं एक्टर हैं तथा हम सभी आत्माओं का परमपिता परमात्मा डायरेक्टर हैं| इस नाटक के अंतर्गत अनेक क्षेत्रों में विभिन्न घटनाएं घटती रहती हैं तथा अनेक परिवर्तन होते रहते हैं| यह विश्वनाटक कोई आकस्मिक, अनियमित वा अव्यवस्थित नहीं हो सकता| पुरुष, प्रकृति और परमात्मा के बिच खेला जा रहा यह नाटक अनेक शाश्वत सिद्धांतों पर चल रहा है| इसमें विश्वनाटक का चक्रीय परिवर्तन का सिद्धांत (Law of cyclic Transformation of world Drama) महत्वपूर्ण है| जिसको आज का आधुनिक विज्ञान भी समर्थन देता है|

सर्जन, अवनति, विसर्जन और पुनः नवसर्जन, यह प्रकृति का अथवा इस विश्वनाटक का एक बुनियादी सिद्धांत है| सब कुछ परिवर्तनशील है, यह सब परिवर्तन चक्रीय हैं और वह श्रेष्ठ से कनिष्ठ, व्यवस्थित से अव्यवस्थित तथा नए से पुराने की तरफ गतिमान होते है| अर्थात कोई भी नई चीज, व्यक्ति या परिस्थिति समय के प्रवाह के साथ नई नहीं रहती है| भौतिक विज्ञान में थर्मोडायनामिक्स का दूसरा सिद्धांत कहता है कि **'Entropy of a system always increases'** अर्थात किसी भी प्रणाली की अव्यवस्था में हमेशा वृद्धि ही होती हैं|

इस सिद्धांत को यदि हम इस धरती पर पुरुष, प्रकृति और परमात्मा के बिच खेले जा रहे इस विशाल विश्वनाटक के संदर्भ में देखें तो वहाँ भी इस विश्वनाटक की शुरुआत एक श्रेष्ठ युग से होती है, जिसका उल्लेख इतिहास में सतयुग या स्वर्णयुग के रूप में किया

गया है| लेकिन सतयुग के बाद त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग आता है| सतयुग का समय कितना श्रेष्ठ और समृद्ध था, उसका वर्णन भी हम अनेक धर्मग्रंथों एवं विश्व की पुरातन संस्कृतियों में देखते हैं| उस समय मनुष्य मूल्यनिष्ठ तथा गुण, शक्ति ओर दिव्यता से संपन्न थे। परन्तु विश्वनाटक के उपरोक्त सिद्धांत के अनुसार धीरे धीरे अवनति होने से आज हम निश्चित रूप से विसर्जन के किनारे आकर खड़े हैं| सृष्टि चक्र में इस समय का उल्लेख महाविनाश या क़यामत के समय के रूप में किया गया है| विश्वनाटक के अंतिम चरण समान इस कलियुग के समय का वर्णन हमारे शास्त्रों में कुछ इसी प्रकार किया गया है - जैसे कि अनाज पूड़ियों में बांधा जाएगा, स्त्रीयाँ मुंह मांगा वर प्राप्त करेगी, स्त्रीयाँ केशो का श्रृंगार वा कलाप करेगी, गाय विष्ठा खाएगी इत्यादि। लेकिन आज हम देख रहे हैं कि जो चिन्हों का वर्णन किया गया है, उससे भी ज्यादा कनिष्ठ परिस्थिति आज हम देख रहे है और अनुभव भी कर रहे है|

वर्तमान समय विश्व में चारो ओर खोखलापन, पापाचार, भ्रष्टाचार, दुराचार, स्वार्थ, इर्षा जैसी नकारात्मकता नजर आ रही है| प्रवर्तमान प्रमुख धर्मों और उनके अनुयायियों में भी पाखंड, असत्यता, धर्मान्धता दिखाई देती है। भक्तगण भी भगवान की स्तुति, आराधना और पूजा स्वार्थवश, लोभवश और प्राप्ति की आश रखकर कर रहे हैं। मनुष्य कर्मभ्रष्ट और धर्मभ्रष्ट हो गया है। प्रकृति के पांचों ही तत्व जैसे कि पृथ्वी, जल, आकाश, वायु और अग्नि भी

अधिक तर रुप से मलिन, शक्तिविहीन और प्रदूषित हो गए हैं। पर्यावरण संबंधित समस्याएं जैसे कि ग्लोबल वार्मिंग; ग्रीन हाउस इफेक्ट तथा हवा, जल, जमीन, आवाज प्रदूषण इत्यादि, दिन प्रतिदिन तीव्रता से बढ़ रही है| ओर वह आज का बहुत ही चिंताजनक विषय बन चुका है।

ऐसे वर्तमान समय में, जबकि समस्त मनुष्य सृष्टि एवं प्रकृति तमोप्रधान और जड़जड़ी भूत हो गई है, अज्ञान रूपी अंधकार है, मनुष्य शक्तिविहीन, मूल्यविहीन, विकारों से ग्रस्त हैं और अति धर्म ग्लानि का समय हैं तब ही जगतनियंता, जगतपिता, सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा का आना अत्यंत आवश्यक हो जाता है| इस संदर्भ में कलियुग और सतयुग के बिच के वर्तमान संगमयुग के समय परमपिता परमात्मा शिव, गीता में दिए गए अपने वचन अनुसार, इस साकार सृष्टि में ब्रह्मा के तन में दिव्य अवतरण करते हैं| ज्योति बिंदु परमात्मा शिव, ब्रह्मा के तन द्वारा, हमें श्रेष्ठ स्वर्णिम युग की स्थापना अर्थ आत्मा, परमात्मा एवं पूरे विश्वनाटक का सत्य ज्ञान दे रहे हैं| इस कल्याणकारी संगमयुग पर जो भी मनुष्य आत्मा परमात्मा के उस ज्ञान और राजयोग की शिक्षा को अपने जीवन में धारण करते है वह नई सतयुगी सतोप्रधान दुनिया की स्थापना के लिए निमित्त बन जाते है। वर्तमान समय परमात्मा का यह दिव्य कार्य चल रहा है। इस ज्ञान योग की शिक्षा के भाग स्वरूप स्वयं परमात्मा अपना स्पष्ट ओर सत्य परिचय देते हुए कहते हैं कि..

"मैं सभी धर्मों की मानव आत्माओं का पारलौकिक सर्वोच्च पिता हूं। मानव आत्माओं की तरह मेरा स्वरूप भी अति सूक्ष्म ज्योतिबिंदु है। मैं हमेशा सभी मानव आत्माओं का कल्याणकारी होने के नाते मेरा गुणवाचक और कर्तव्यवाचक नाम शिव है। आप मुझे सदाशिव और सत्यं-शिवम्-सुंदरम के रूप में याद करते हो। जिस तरह तुम इस विश्वनाटक में मनुष्य के रुप मे अनेक शरीर रूपी वस्त्र को धारण कर अनेक जन्मों का पार्ट बजाते हो, इस प्रकार के पार्ट से मैं अलिप्त हूँ। मैं जन्म-मरण रहित अजन्मा हूँ। इसीलिए मैं अकर्ता और अभोगता भी हूँ। मैं, देहातित होने के नाते, हमेशा अपनी निराकारी अवस्था में स्थित रहता हूँ। इसीलिए मेरी पूजा किसी देहधारी के रूप में नहीं बल्कि ज्योतिर्लिंग के रूप में होती है। मेरा निवास स्थान इन पांच तत्वों से बनी साकारी दुनिया से परे सर्वोच्च परमधाम में है। इस धाम में पांच तत्वों का कोई अस्तित्व नहीं है। यह एक स्वयं प्रकाशित निराकारी दुनिया है। सृष्टि के इस

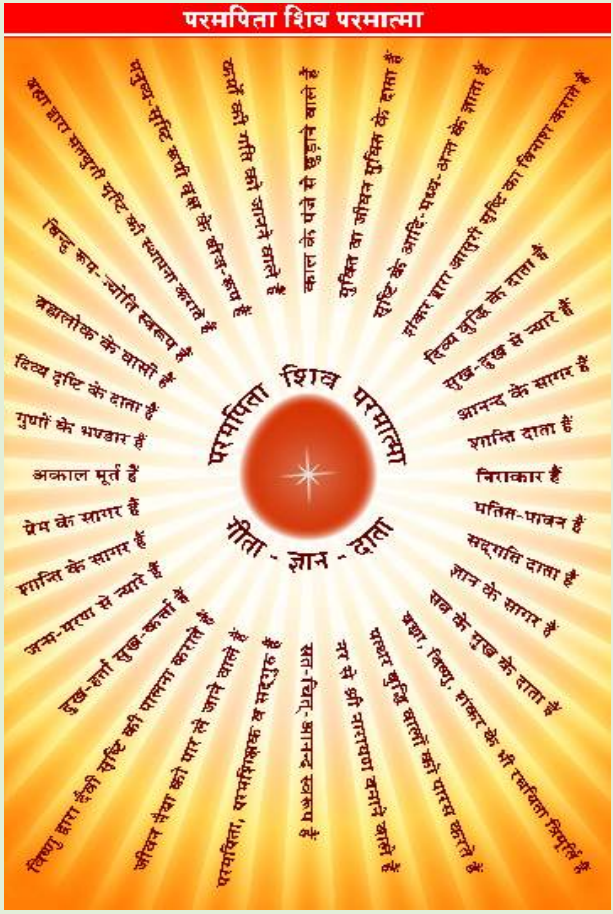

नाटक में मेरा कर्तव्य सृष्टि परिवर्तन का है। सृष्टि चक्र के संगमयुग पर, ब्रह्मा के शरीर में अवतरित हो कर, ज्ञान योग की शिक्षा देकर, सर्व धर्मों का विनाश कर एक धर्म की स्थापना करता हूँ। कलियुगी दुनिया के विनाश के बाद, मैं सतयुगी श्रेष्ठ दैवी दुनिया का नवनिर्माण करता हूँ। ५००० वर्ष के इस सृष्टिचक्र को एक कल्प कहा जाता हैं। सृष्टि का यह पूरा चक्र एक वृक्ष के समान है जिसे कल्पवृक्ष कहा जाता है। मैं इस कल्पवृक्ष का बीज हूँ।

वर्तमान संगमयुग में, सभी धर्मों की आत्माओं के पिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा स्वयं का जो परिचय दिया है उसको समझ ने से हम परमात्मा के बारे में जो परस्पर विरोधाभासी मान्यताये, श्रद्धा और मत है उससे सहज ही मुक्त हो सकते हैं।

---आत्मा और परमात्मा के बीच समानता और अंतर---

वर्तमान समय स्वयं परमात्मा से जीवात्मा और परमात्मा का स्पष्ट परिचय पाने के बाद आत्मा और परमात्मा के बीच जो समानताएं हैं और जो वैषम्य हैं वो भी स्पष्ट हो जाते हैं।

साम्य

मनुष्य आत्माए	परमात्मा
• चैतन्य है ।	• चैतन्य है ।
• अति सूक्ष्म, ज्योतिर्बिंदु स्वरूप है ।	• अति सूक्ष्म, ज्योतिर्बिंदु स्वरूप है ।

• शाश्वत,सनातन, अजर,अमर, अविनाशी और निराकार है ।	• शाश्वत, सनातन, अजर, अमर, अविनाशी और निराकार है ।
• मूल रूप में परमधाम निवासी है ।	• सदा परमधाम निवासी है ।

वैषम्य (विषमता)

मनुष्य आत्माए	परमात्मा
आत्माएं अनेक है ।	परमात्मा एक ही है ।
जन्म-मरण के चक्र में आती हैं।	अजन्मा हैं ।
माता के गर्भ से जन्म लेती है।	अयोनिज हैं।
स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर धारण करती है।	अकाय है। अशरीरी है ।
सुख-दु:ख भोगती है।	अभोगता है।
संपूर्ण अहिंसक नहीं है।	संपूर्ण अहिंसक है।
आत्माएं स्वार्थी हो सकती है।	नित्य कल्याणकारी है।
विकारों के प्रभाव के कारण आत्मा की अवस्था बदलती है। सत्व, रजस एवं तमस	विकारों से मुक्त है। अत: अपरिवर्तनशील, निर्लेप और सदा शिव है।
शक्ति स्वरूप है।	सर्व शक्तिमान् है।
गुण स्वरूप है।	सर्व गुणों का सागर है
अनादि-आदि स्वरूप में शांत स्वरूप, आनंद स्वरूप, प्रेम स्वरूप, सुख स्वरूप, ज्ञान स्वरूप और पवित्र स्वरूप हैं।	सुख के सागर, आनंद के सागर शांति के सागर, प्रेम के सागर, ज्ञान के सागर एवं पवित्रता के सागर हैं। सर्व गुण संपन्न है।

--------- क्या परमात्मा सर्वव्यापी हैं ? --------

विश्व में ऐसी मान्यता भी प्रचलित है कि परमात्मा सर्वव्यापी हैं| अर्थात कण-कण में व्याप्त हैं| यह मान्यता भावनात्मक स्तर पर यथार्थ हो सकती हैं| परन्तु सैद्धांतिक तौर पर देखा जाए तो इस बात की यथार्थता के सामने कई प्रश्न चिन्ह खड़े हो जाते हैं|

सर्व प्रथम तो परमात्मा यदि सर्वव्यापी हैं अर्थात कण-कण में व्याप्त हैं तो यह सृष्टि, जिसे हम परमात्मा की रचना मानते हैं और परमात्मा, जिसे हम सृष्टि का रचयिता मानते हैं, उनके बीच का भेद ही समाप्त हो जाता हैं| परमात्मा का कण-कण में होना ऐसा अर्थ सूचित करता है कि समग्र स्थूलसृष्टि और जीवसृष्टि ही परमात्मा है| परमात्मा का जैसे कोई स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं है| इस चर्चा के पूर्व हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि परमात्मा का स्वतंत्र अस्तित्व है, वे सर्व मनुष्य आत्माओं के पिता हैं, उनका अपना अलग नाम, रूप, गुण, कर्तव्य और धाम है| वे जगत नहीं, जगतनियंता हैं, कण-कण में व्याप्त नहीं, कण-कण के रचयिता है| अगर कण कण में व्याप्त है तो क्या हम उनके ऊपर चलते है? खाते है? पीते है? इत्यादि |

परमात्मा के निवास स्थान के बारे में विविध धर्म स्थापको की मान्यताओं की चर्चा के दौरान हमने समझा है कि उनमें से हरेक ने परमात्मा के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार किया है| परमात्मा इस साकार लोक के नहीं है परन्तु, साकार लोक से ऊपर, परमधाम निवासी है, कण-कण में नहीं | श्रीमद् भगवत गीता में भी परमात्मा ने स्पष्ट रूप से कहा है की

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

अर्थात हे भारत जब जब धर्म ग्लानी होती है और अधर्म ज्यादा बढ़ जाता है तब तब मैं स्वयं एक सतधर्म की स्थापना के लिए परमधाम से अवतरण करता हूँ |

आत्मा-परमात्मा में जो फर्क है उसकी चर्चा से भी स्पष्ट होता है कि आत्मा और परमात्मा दोनों एक दुसरे से भिन्न हैं| सृष्टि नाटक की चर्चा के दौरान यह भी स्पष्ट होगा की जीव, जगत और जगदीश या आत्मा, परमात्मा और सृष्टि (Man, Matter & God) इन तीनों का अपना स्वंतत्र अस्तित्व है|

- परमात्मा को हम अपना परमपिता, परम शिक्षक, परम सद्गुरू मानते हैं| तो अब विचार करें कि कोई पिता अपने पुत्र में शिक्षक या गुरु अपने शिष्य में किस तरह व्याप्त हो सकता है? सर्वव्यापी मानने से दोंनो के बीच का भेद समाप्त हो जाता है| परमात्मा सर्वव्यापी हो तो सब दु:खी क्यों है? आपस में क्यों लड़ते है? एक दुसरे को दु:ख क्यों देते है?
- विश्वबंधुत्व की भावना को हर धर्म ने स्वीकार किया है| हम मानते है कि सभी मनुष्य आत्माएं एक ही परलौकिक परमपिता की संतान हैं और आपस में वास्तविक तौर पर भाई-भाई हैं अर्थात सर्व आत्माएं और परमात्मा भिन्न हैं| उनके बीच पिता-पुत्र का संबंध है| यदि परमात्मा सर्वव्यापी है अर्थात आत्मा परमात्मा एक ही हैं तो विश्व बंधुत्व के बजाय विश्व पितृत्व की बातें करनी चाहिये|

- यदि परमात्मा सर्वव्यापी है तो उसे दर-दर भटक कर ढूंढने की वा आसमान की और हाथ करके "हे प्रभु, दर्शन दो" या "हे प्रभु, कृपा करो," याद् करने की क्या आवश्यकता? साधु-संन्यासी गण एक ओर परमात्मा शिव की शिवलिंग के रूप में पूजा करते हैं और दूसरी ओर स्वयं को शिव समझ 'शिवोहम' की रट लगाते रहते हैं| क्या यह विरोधाभासी नहीं है? दु:ख के वा बीमारी के समय में भगवान को पुकारते हुए कहते हैं: 'हे प्रभु, दु:ख हरो' ऐसा कहने की क्या जरुरत?
- परमात्मा को हम सर्व गुणों का सागर, सर्व शक्तिओं का सागर, दया और करुणा का सागर कहते हैं| जब कहीं कोई व्यक्ति या वस्तु उपस्थित होती है तो वहां उसके गुण प्रत्यक्ष हुए बिना रह नहीं सकते | अर्थात जहां गुणी है वहां गुण भी हैं| उदाहरण के तौर पर गर्म तपाया हुआ लोहा उसकी गर्मी के गुण को बिना प्रत्यक्ष किये रह नहीं सकता| अत: यदि परमात्मा सर्वव्यापी हो तो उसके सर्व गुणों एवम् शक्तिओं का हर स्थान पर अनुभव होना चाहिये| इसके बदले आज तो दुनिया में ऐसी परिस्थिति है कि परमात्मा के गुण या उसका अंश मात्र भी कोई मानव या प्राणी में ढूढ़ना दुष्कर है|

उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है| संसार से अलग उनका स्वतंत्र अस्तित्व है| परमात्मा रचयिता है और जगत् जिन कणों का बना हुआ है वह उनकी रचना है| भावनात्मक तौर पर देखा जाये तो जब कोई प्रियतमा अपने पति के प्रेम में भावविभोर हो जाती है तब उसकी नजर जहां जहां पड़ती है वहां उसे प्रेमी ही नज़र आता है| उसी प्रकार प्रभु की याद् वा प्रेम में तन्मय, भावविभोर भक्तों को वे जहाँ जहाँ नज़र डालेंगे

वहा प्रभु के दर्शन करेंगे| मीरा उसका उत्तम उदाहरण है| लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि प्रियतमा का प्रियतम या भगवान सर्वव्यापी है| उसका प्रेमी किसी निश्चित स्थान पर बैठा हुआ है| इससे यह स्पष्ट होता है कि परमात्मा की सर्वव्यापकता एक भावना हो सकती है पर सत्य वा सिद्धांत नहीं|

--------- ॐ शांति --------